वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भूमिका : एक ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ. आलोक कुमार पाण्डेय
सह. प्राध्यापक इतिहास
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय छतरपुर, म.प्र.

सारांश

राष्ट्रीय आंदोलन वह उर्वर भूमि थी जिसमें वैचारिक और क्रियात्मक रूप से महिला आंदोलन विकसित हुआ क्योंकि उस समय देश के सामने सबसे बड़ी चुनौती स्वतंत्रता प्राप्त करना थी। इसलिए महिला आंदोलन भी राष्ट्रीय हितों को साथ लेकर चल रहा था। इस प्रकार के आंदोलन की सबसे प्रमुख विशेषता यह थी कि इसमें समाज के उच्च वर्गों से लेकर निम्न वर्गों तक की महिलाएं सम्मिलित थी। परिणामस्वरुप स्वतंत्रता प्राप्त करने के सथ ही वे सुविधाएं भारतीय महिलाओं को स्वत: मिल गईं जिनके लिए पाश्चात्य देशों की महिलाओं को पृथक से संघर्ष करना पड़ा। इसका दूसरा परिणाम यह हुआ कि भारतीय महिला आंदोलन सामाजिक लक्ष्यों को सामने रखकर संगठित होने लगा। इस दृष्टि से स्वतंत्रता आंदोलन के अंतर्गत महिलाओं ने प्रमुख आंदोलनों जैसे असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन आदि में सक्रिय रूप मे भाग लिया। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी एक महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक पहलू रही है, जिसने देश के स्वतंत्रता संघर्ष को न केवल सशक्त किया, बल्कि समाज में महिलाओं की स्थिति में भी सकारात्मक परिवर्तन लाया।

कुंजी भूतशब्द

राष्ट्रीय आंदोलन, जेंडर, महात्मा गांधी, एनी बेसेंट, कमला चट्टोपाध्याय, सरोजिनी नायडू, सविनय अवज्ञा आंदोलन, असहयोग आंदोलन,

पिछले दशक में राष्ट्रीय आंदोलन में जेंडर के मुद्दे पर काफी शोधकार्य हुआ है। जिनमें यह प्रतिपादित किया गया कि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। राष्ट्रीय आंदोलन के विभिन्न चरणों में महिलाओं ने सक्रिय भाग लिया महिलाओं ने अपनी आशाओं और आकांक्षाओं के साथ संख्यात्मक दृष्टि से राष्ट्रीय आंदोलन को मजबूत बनाया साथ

ही वह राष्ट्रीय आंदोलन में अपने मुद्दों और मशविरे भी साथ लेकर आईं। इन्हें पहले बार घर से बाहर निकलकर किसी राष्ट्रीय गतिविधि में भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ। महिलाओं के राजनीतिकीकरण की यह प्रक्रिया इतने सहज रूप में हुई कि पुरुष संरक्षकों की ओर से किसी रूकावट के बिना उनको सराहना ही मिली।

भारत की धार्मिक और सांस्कृतिक परंपरा में महिलाओं को शक्ति का प्रतीक माना जाता है। महिलाओं के लिए अपने आप को उसे शक्ति का अंश मानकर राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ना सहज हो गया। तनिका सरकार ने अपने शोध में इस पहलू पर विशेष जोर दिया है। उनके अनुसार राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी इसलिए आसानी से हो सकी क्योंकि गांधी जी को एक संत और राष्ट्रीय आंदोलन को धर्म युद्ध माना गया। महात्मा गांधी की छवि संत महात्मा होने के कारण उनके नेतृत्व में प्रारंभ हुए राष्ट्रीय आंदोलन की नैतिक और राजनीतिक छवि बनी। उसका क्षेत्र राजनीति से ऊपर उठकर नैतिक और धार्मिक हो गया। देशभक्ति को धर्म माना गया और देश को भारत माता की संज्ञा दी गई। जिसके लिए बड़े से बड़ा बलिदान भी काम ही था। राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं को यह कहकर जोड़ा गया कि जब तक महिलाओं की भीतरी शक्ति बाहर नहीं आएगी तब तक बलिदान अधूरा ही रहेगा। इस तरह के आग्रह में एक बुनियादी समस्या यह थी कि इसमें महिलाओं की भीतरी शक्ति को जगाने की बात कही गई थी परंतु पारंपरिक सोच में महिलाओं को दबाकर घरेलू क्रिया-कलाप तक सीमित रखने की बात विद्यमान थी। गांधी जी ने इस समस्या का बड़ा सुंदर समाधान निकाला। उन्होंने आंदोलन का धार्मिक और नैतिक पक्ष बनाए रखते हुए इसे अहिंसात्मक आंदोलन बनाया। जिसमें धैर्य, त्याग तथा पीड़ा सर्वोपरि थे। ये मुख्यतः महिलाओं के ही गुण माने जाते हैं। यह माना गया कि अहिंसात्मक आंदोलन में महिलाओं के नारी सुलभ व्यक्तित्व पर कोई आंच नहीं आएगी। इसके पीछे संभवतः एक कारण यह भी था कि महिलाओं की भागीदारी के कारण पुलिस कदाचित आंदोलनकारी पर बेरहमी से शक्ति का प्रयोग नहीं करेगी।[1]

महिलाएं प्रथम विश्व युद्ध (1914-1919) के समय से राजनीति से परिचित हो चुकी थी। प्रथम विश्व युद्ध के बाद कुछ महिला संगठनों के बनने, कुछ महिला नेताओं के उभरने तथा

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

राजनीतिक क्रियाकलापों में महिलाओं के भाग लेने की पृष्ठभूमि के कारण कांग्रेस का अपने आंदोलनकारी कार्यक्रमों में महिलाओं को शामिल करना संभव हो सका। एनी बेसेंट तथा सरोजिनी नायडू जैसी महिला नेताओं से प्रेरित होकर महिलाओं ने राष्ट्रीय आंदोलन में भागीदारी करने का मन बनाया। परंतु इन नेताओं में से किसी ने भी महिलाओं के लिए न तो कोई कार्यक्रम तय किया और न ही आंदोलन में महिलाओं के लिए कोई जगह बनाई। वह तो जब कांग्रेस ने बड़े पैमाने पर जन-आंदोलन शुरू किया। तब इसमें महिलाओं को शामिल करने के प्रयत्न किए गए।[2]

`गांधी जी राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी के पूर्ण पक्ष में थे। अपने भाषणों और वक्तव्यों में वह महिलाओं को यह कहकर प्रेरित किया करते थे कि देवियों और वीरांगनाओं की भांति आंदोलन में उनकी अलग भूमिका है और उनमें इस भूमिका को निभाने की क्षमता और हिम्मत भी है। उन्होंने यह भी कहा कि महिलाओं को सीता, द्रौपदी और दमयंती की भांति सात्विक, दृण और नियंत्रित होना चाहिए तभी वह सही अर्थों में अपने भीतर पुरुषों के साथ बराबरी का भाव विकसित कर सकेंगीं। गांधी जी के अनुसार बराबरी का यह अर्थ कदापि नहीं था कि महिलाएं वे सब कार्य करें जो पुरुष करते हैं। गांधी जी की आदर्श दुनिया में स्त्रियों और पुरुषों के अपने स्वभाव और क्षमता के अनुसार काम के अलग-अलग क्षेत्र निर्धारित थे। उन्होंने महिलाओं से स्वदेशी व्रत लेने को कहा। गांधी जी का कहना था कि वह सभी विदेशी वस्तुओं का परित्याग करें और खादी वस्त्र पहनने के साथ ही थोड़ा समय सूत कातने की प्रतिज्ञा करें। खादी द्वारा गांधी जी महिलाओं को श्रम-प्रक्रिया में लाना चाहते थे। उनका मानना था कि वह घर में रहकर भी खादी उद्योग चला सकती थीं। इस रूप में राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने के लिए उनके घर से बाहर जाना और परिवार छोड़ना जरूरी नहीं था। गांधी जी के नैतिक आदर्श इतने ऊंचे थे कि जब महिलाएं घर से बाहर आकर राजनीति के क्षेत्र में कार्य करती थीं तो उनके परिवार के सदस्य उनकी सुरक्षा के विषय में निश्चिंत रहा करते थे।[3]

सन् 1920 के असहयोग आंदोलन के दौरान भारी संख्या में महिलाएं पहली बार राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ीं। हजारों की संख्या में महिलाएं खादी और चरखा बचने के लिए गली-गली गईं।

खादी को लोकप्रिय बनाने के लिए जुलूस निकाले तथा समूह में विदेशी वस्तुओं की होली जलाई। उन्होंने शराब की दुकानों पर धरना दिया और अनेक स्थानों पर शराब के लाइसेंस की सरकारी नीलामी को अवरोधित किया। सन 1921 के कांग्रेस सम्मेलन में 144 महिला प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इनमें से 130 महिलाएं स्वैच्छिक कार्यकर्ता थी और 14 महिलाएं विभिन्न समितियां से संबद्ध थी। मुंबई में महिलाओं ने राष्ट्रीय स्त्री सभा का गठन किया। यह पहला महिला संगठन था जो बिना पुरुषों की मदद के कार्य करता था। इसके दो उद्देश्य थे स्वराज और महिलाओं का उत्थान। यह माना गया कि महिलाओं का उद्धार उनकी राजनीति गतिविधियों से ही संभव था। अतः देश का उद्धार और महिलाओं का उद्धार एक ही सिक्के के दो पहलू माने गए। राष्ट्रीय स्त्री सभा के सदस्यों ने पूरी मुंबई में खादी का प्रचास्प्रसार किया। सन 1921 में प्रिंस ऑफ वेल्स की भारत यात्रा के दौरान महिलाओं के द्वारा पूरे मुंबई में हड़ताल का आयोजन किया गया। सभा की सदस्यों ने गांव में बनाई जाने वाली खादी की बिक्री के लिए शहरों में बिक्री केंद्र खोले, प्रदर्शनी आयोजित की और व्यक्तिगत रूप से घर-घर जाकर खादी बेचीं। गांधी जी से प्रेरित होकर उन्होंने हरिजनों की शिक्षा के लिए कई केंद्र खोले थे। ये कक्षाएं सन 1921 से 1930 तक सक्रिय रूप से चलीं। जब तिलक कोष की स्थापना हुई तो स्त्री सभा ने 44000 एकत्रित करके इसमें योगदान दिया।[4] असहयोग आंदोलन में सक्रिय भागीदारी से महिलाओं के मन में अपनी उपलब्धियां के प्रति एहसास जगा। सन 1920 के दशक में एक तमिल कवि द्वारा लिखित कुछ पंक्तियां उल्लेखनीय हैं -

"नाचो गाओ और खुशियां मनाओं।
जिन्होंने कहा था कि महिलाओं का किताबें
छूना पाप है, मर चुके हैं।
जिन पागलों ने कहा था कि वे स्त्रियों को घर में बंद।
करके रखेंगे, अब अपना चेहरा छिपाए बैठे हैं ।
उन्होंने घरों में हमसे ऐसे कार्य कराए
मानो हम गाय बैल हैं।
मार खाकर चुपचाप काम करना
हमने उसे समाप्त कर दिया है।
नाचो गाओ और खुशियां मनाओ।"[5]

सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930) से राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी का एक नया चरण प्रारंभ हुआ। गांधी जी द्वारा अहमदाबाद से डांडी तक 240 मिल की यात्रा की गई। जहां-जहां यात्रा का पड़ाव होता वहां भारी संख्या में महिला एकत्रित होतीं। गांधी जी ने उन्हें मुख्य रूप से विदेशी कपड़ों और शराब की दुकानों का बहिष्कार करने का दायित्व सौंपा जिसे महिलाओं ने बखूबी अंजाम दिया। डांडी यात्रा के उपरांत महिलाएं पूरी तरह से संगठित रूप से राष्ट्रीय आंदोलन में शरीक हो गईं। 6 हजारों महिलाओं ने नमक सत्याग्रह आंदोलन में नमक बनाने से लेकर नमक बेचने तक कार्य किया। कमला देवी चट्टोपाध्याय जैसी नेताओं से महिलाओं की जो छवि निर्मित हुई वह एनी बेसेंट और सरोजिनी नायडू या मारग्रेट कजिन्स द्वारा बनाई गई छवि से एकदम भिन्न थी। इन महिलाओं द्वारा त्यागमय भारतीय नारी की छवि को महिमामण्डित किया गया। जबकि कमला देवी चट्टोपाध्याय ने संघर्षमयी खेतीहर महिलाओं की छवि को प्रस्तुत किया। कांग्रेस की गतिविधियों का केंद्र बिंदु ग्रामीण किसान महिलाएं रहीं।[7]

सन् 1930 में मुंबई चुनाव बूथ पर चुनाव के विरोध में धरने पर बैठी 400 महिलाओं को एक साथ गिरफ्तार किया गया और उन्हें कठोर दंड दिया गया। सन 1932-33 के दौरान शहरी और ग्रामीण महिलाओं ने भारी संख्या में गिरफ्तारी दी। एक अनुमान के अनुसार सन 1932-33 के दौरान बीस हजार सत्याग्रही महिलाएं जेल भेजी गईं। 20वीं शताब्दी के दौरान अनेक महिला संगठनों की स्थापना की गई जैसे- देश सेविका संघ, नारी सत्याग्रह समिति, महिला राष्ट्रीय संघ, लेडिज पिकेटिंग बोर्ड, स्त्री स्वराज संघ, स्वयं सेविका संघ आदि। इन सभी संगठनों ने जुलूस एवं प्रभात फेरी निकालना धरने आदि आयोजित करने के साथ-साथ खादी का प्रचार एवं बिक्री करने का भी कार्य किया। राष्ट्रीय आंदोलन के अगले चरण भारत छोड़ो आंदोलन (1942) में महिलाओं ने भारी संख्या में सक्रिय भागीदारी की। हजारों महिलाएं भूमिगत हो गईं। समानांतर सरकार बनाने में भागीदार बनी। कई गैर कानूनी कार्यों में भी उनकी भूमिका रही। बड़े पैमाने पर महिलाओं को आत्मरक्षा संबंधी प्रशिक्षण दिया गया था कि विशेष परिस्थिति में वे अपनी रक्षा कर सकें।[8]

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

इस बारे में प्रायः सभी विश्लेषक एक मत हैं कि राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी गांधी जी के कारण हुई। 1940 के दशक तक गांधी जी एक जीते युग-पुरुष बन चुके थे। लोग उन्हें मुक्ति का दूत समझने लगे थे। जहां-जहां वे जाते भारी संख्या में महिला एकत्रित होतीं। गांधी जी का मुख्य योगदान यह था कि उन्होंने महिलाओं के संबंध में समाज की सोच बदली। गांधी की यह सोच थी कि मातृत्व के अनुभव से गुजरने के कारण महिलाएं शांति और अहिंसा का संदेश फैलाने के लिए ज्यादा उपयुक्त थीं। गांधी जी पर एक विचार पूर्ण आलेख में मधु किश्वर ने लिखा है कि गांधी जी ने महिलाओं को सार्वजनिक जीवन में एक नया आत्मसम्मान, एक नया विश्वास और एक नवीन छवि को संभव बनाया। गांधी जी ने पारंपरिक प्रतीकों को सकारात्मक ढंग से इस्तेमाल करते हुए महिलाओं को राष्ट्रीय आंदोलन में शामिल होने के लिए एक प्रकार से मजबूर कर दिया।

सन्दर्भ

1. प्रतियोगिता दर्पण, सितंबर 2022, पृष्ठ संख्या 116
2. मल्होत्रा प्रिया दीप्ति, महिला आंदोलन कल और आज, नई दिल्ली 2001, पृष्ठ संख्या 70
3. बंदोपाध्याय अनु, बहरूप गांधी, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली, 2020, पृष्ठ संख्या 67
4. गौड शर्मा गणेश दत्त, खादी का इतिहास, हिंदी साहित्य मंदिर बनारस सिटी, 1923 पृष्ठ संख्या 122
5. प्रतियोगिता दर्पण, सितंबर 2022, पृष्ठ संख्या 117
6. मुखर्जी कनक, संघर्षरत महिलाएं, संघर्ष में महिलाएं,Tricontinental for social Research, March 2021
7. धमीजा जसलीन, कमला चट्टोपाध्याय, नेशनल बुक ट्रस्ट 2011
8. चंद्र विपिन, आधुनिक भारत का इतिहास, ओरिएंट ब्लैक स्वान 2009